सलमा अरस्तू

कलाकृतियों से उभरते संदेश

तहसीन उस्मानी

सलमा अरस्तू की कला एक कहानी सुनाती है। वह सोच-विचार कर योजनाबद्ध तरीके से ऐसा नहीं करतीं। वह कहती हैं, ''मैं जैसे-जैसे काम करती हूं, संदेश उभरने लगते हैं- प्यार के, शांति के, जीवन को मिलकर जीने और उसका उत्सव मनाने के संदेश।''

राजस्थान के एक हिन्दू परिवार में जन्मी और एक मुस्लिम से विवाह करने वाली सलमा अरस्तू सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों के चित्रण के लिए चित्रकारी और कैलिग्राफी के एक अद्भुत मिलाप का उपयोग करती हैं। कैलिफोर्नियावासी इस चित्रकार की ''म्यूज़िकल फाउंडेशन,'' ''द पपेट्स,'' ''अलोन इन द क्राउड,'' ''होप- द सन,'' ''द नेमिंग सेरेमनी,'' ''प्लेइंग टुगेदर,'' जैसी कलाकृतियां में विविध प्रकृति और रंगशैली उनके अपने विविधता भरे जीवन को प्रतिबिंबित करती है। वह अरबी कैलिग्राफी और इस्लामी कला से तो प्रभावित हैं ही, साथ में उनकी कला में विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव भी साफ दिखता है।

बाएं हाथ की उंगलियों के बिना जन्मी सलमा अरस्तू 1974 में बड़ौदा की एम.एस.यूनिवर्सिटी से ललित कला में स्नातक होने के बाद मिक्स्ड मीडिया में काम करने लगीं। कुछ समय बाद वह द्विआयामी के बजाय त्रिआयामी काम की ओर मुड़ीं और क्ले और पेपियरमैशी से प्रयोग करने के बाद अन्ततः उन्होंने लेज़र कट एल्युमिनियम में कैलिग्राफिक अक्षरों और आकृतियों को अपनाया।

30 बरस की अपनी रचना यात्रा के बारे में उनका कहना है, ''... मैं पढ़ाई के दौर से ही अमूर्त मानव आकृतियां बनाती थी। विवाह के बाद 1976 में ईरान और फिर 1980 में कुवैत में मेरा परिचय फारसी-अरबी कैलिग्राफी से हुआ। मैं इस्लामी कला संग्राहलयों में सहायक के रूप में काम करने लगी।'' उनके काम में पुरानी पांडुलिपियों की पाठ्य सामग्री की नकल करना शामिल था- बस, वह अरबी कैलिग्राफी की प्रवाहित से दिखतीं रेखाओं के आकर्षण से बंध गईं। धीरे-धीरे ये रेखांए उनकी कल्पना में मानवता के प्रवाह के रूप में उभरने लगीं और डिज़ाइनों का स्वरूप लेने लगीं। वह कहती हैं, ''मेरी कैलिग्राफी शैली स्वतंत्र है, मैं किसी खास शैली को लेकर नहीं चलती हूं। मैं जो लिखती हूं, उसी के आभास और आयाम के अनुरूप काम करती हूं।''

सलमा अरस्तू की कलाकृतियों के चेहरे नहीं होते क्योंकि उन्हें लगता है कि चेहरे जाति, नस्ल, धर्म के चलते उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को सीमित करते हैं। ''मैं शुरू से ही मानती थी कि... हम सब एक हैं। हमारा भाव, हमारा तत्व एक है। ...इसलिए मेरे चित्रों में पहचान या विशेष फ़ीचर नहीं है . . . बिना चेहरों की आकृतियां सार्वभौम मानव आकृतियां हैं... ।''

सलमा और उसके वास्तुकार पति आलमदार हुसैन अरस्तू ने अमेरिका में बसना पसन्द किया। ''हमें लगा कि हम अमेरिकी जीवनशैली में फिट हो जाएंगे। मुझे लगता है कि हम साहस से भरपूर थे और बड़ी चुनौतियों की तलाश कर रहे थे।'' अमेरिका के सांस्कृतिक प्रभाव की बात छिड़ने पर वह बताती हैं कि उन्हें अमेरिकियों की ईमानदारी ने, जीवन का सुख पाने की उन की इच्छा ने, और उनकी कला, संगीत और उत्सवों ने बहुत प्रभावित किया, ''वैसे मैं दिल से असली भारतीय हूं, खासी आध्यात्मिक और सहिष्णुता में विश्वास करने वाली। यह स्वाभाविक है। वह कहती हैं, ''मुझे मेरी मां से सादगी का उपहार मिला।''

उनके चित्र आम आदमी के करीब हैं। सलमा के चित्रों के पीछे उनके निजी अनुभवों की प्रेरणा भी है, जैसे कि एक दृश्य जो बचपन से उनके दिमाग में दर्ज़ है। ''मेरी मां जो हमारे पूरे घर की ऊर्जा की स्रोत और आधार थीं... बुरी तरह बिलख रही थीं कि मैं विधवा हो गई। वह बहुत सारी स्त्रियों से घिरी थीं जो उन्हें दिलासा देने की कोशिश कर रही थीं। मैं जान गई कि मेरे पिता नहीं रहे। मैं 10 बरस की थी और स्कूल से लौटी ही थी। मैंने घर की दहलीज़ पर से यह नज़ारा देखा।'' यह स्मृति उनकी कृति ''व्हेन शी बिकेम ए विडो'' में दर्ज़ है। अरस्तू ने कई सालों तक कड़ी मेहनत की और उन्हें अब विश्वास है कि उन्होंने सफलतापूर्वक कला के मामले में अपनी समझ और रूप विकसित कर लिया है। उनके अनुसार, ''मैं परंपरा को तोड़कर कुछ नया करना चाहती थी।''

वह कहती हैं, ''मैं अपनी कला के जरिये ऐसे संसार को रचने का प्रयास करती हूं जहां मेलमिलाप का जादू केंद्रीय भूमिका में हो। मेरे विषय वे लोग हैं जो वे जो कुछ भी करते हैं, मिलकर करते हैं। वे एकसाथ पहल करते हैं, साथ जश्न मनाते हैं, साथ दुखी होते हैं और प्रार्थना करते हैं।'' वह कहती हैं, ''इस दुनिया में ज़रूरी है कि हम एक-दूसरे को समझें, बिना मतभेद के और एक मानव समुदाय के रूप में उभरें।'' उनकी प्रेरणा अपना विश्वास है जो उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा करने को प्रेरित करता है। वह कहती हैं, ''चित्रकारी मेरे लिए पूजा की तरह है।'' आध्यात्मिक रोशनी की ओर, सूफी शृंखला, में वह चित्रों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन को प्रदर्शित करती हैं।

सलमा अरस्तू बताती हैं कि 70 के दशक में जब वह भारत में पढ़ रही थीं तो उन्हें लगता था कि कला कुछ समूहों और संस्थाओं तक ही सीमित है और आम लोगों तक नहीं पहुंच पाती, न ही वे उसे समझते हैं। ''लेकिन 80 के दशक में अमेरिका आने पर मैंने पाया कि यहां कला फलफूल रही है, स्कूलों में कला को बहुत महत्व दिया जाता है और लोग उसे सराहते हैं।'' वह अमेरिका में अपनी कला की स्वीकृति से संतुष्ट हैं। '' . . .मेरी कृतियों के 95 प्रतिशत संग्राहक अमेरिकी हैं ...भारतीय उपमहाद्वीप के लोग अभी तक कला में आमतौर पर निवेश नहीं करते।''

चित्रकारी और शिल्प के अलावा सलमा अरस्तू की रुचि लेखन में भी है। हिन्दी में उनकी कविताओं का पहला संग्रह *दर्द की सीढ़ियां* 1981 में प्रकाशित हुआ था। अमेरिका में आने के बाद वह अंग्रेजी में लिखने लगीं। हाल में आए उनके कविता संग्रह *द लिरिकल लाइन* में करीब 30 लघु कविताएं हैं, ''कुछ चीज़ें चित्र या शिल्प में अभिव्यक्त नहीं होती और मैं उन्हें कविता में पिरो देती हूं।''

फोटो: साभार सलमा अरस्तू

बिल्कुल बाएं, नीचे: होप- द सन, कैनवॅस पर एक्रिलिक, 121.92 x 152.4 से.मी.।
बाएं: हाउ डू यू सोल्व, 106.68 x 132.08 से.मी.।
नीचे: रीचिंग आउट, कैनवॅस पर एक्रिलिक, 152.4 x 228.6 से.मी.।

ज़्यादा जानकारी के लिए:
सलमा अरस्तू
http://www.salmaarstu.com/